



क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन में भारत की परमाणु नीति

डॉ रवि शंकर सरकार

शोधार्थी

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सार

भारत की परमाणु नीति ऊर्जा सुरक्षा, राष्ट्रीय रक्षा और वैश्विक कूटनीति को संतुलित करने वाली एक रणनीतिक ढांचा है, जो क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डॉ. जहांगीर होमी भाभा द्वारा शुरू की गई तीन-चरणीय रणनीति भारत के सीमित यूरेनियम और प्रचुर थोरियम संसाधनों का उपयोग करके ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, जबकि 2047 तक 100,000 मेगावाट परमाणु क्षमता का लक्ष्य जलवायु परिवर्तन लक्ष्यों को समर्थन देता है। रक्षा क्षेत्र में, 'नो फर्स्ट यूज' (NFU) और 'न्यूनतम विश्वसनीय निरोध' सिद्धांतों पर आधारित परमाणु त्रिकोण (भूमि, वायु और समुद्र-आधारित) भारत को चीन और पाकिस्तान जैसे क्षेत्रीय खतरों का सामना करने में सक्षम बनाता है। 2008 के भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते ने भारत को वैश्विक परमाणु व्यवस्था में एकीकृत किया, जिससे इसकी कूटनीतिक स्थिति मजबूत हुई। हालांकि, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता, संसाधन सीमाएं और सुरक्षा चिंताएं चुनौतियां हैं। थोरियम-आधारित रिएक्टर, निजी क्षेत्र की भागीदारी और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग भविष्य में भारत की परमाणु नीति को और सशक्त करेंगे। यह सार भारत की परमाणु नीति के रणनीतिक महत्व और वैश्विक प्रभाव को रेखांकित करता है।

शब्दकुंजी : कूटनीति, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता, संसाधन, सीमाएं और सुरक्षा इत्यादि

भूमिका :

भारत की परमाणु नीति एक बहुआयामी रणनीति है, जो ऊर्जा सुरक्षा, राष्ट्रीय रक्षा और वैश्विक कूटनीति के बीच संतुलन स्थापित करती है। भारत का परमाणु कार्यक्रम, जो 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC) और 1954 में परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) की स्थापना के साथ शुरू हुआ, डॉ. होमी जहांगीर भाभा की दूरदृष्टि का परिणाम है।¹ यह नीति न केवल भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन की गई है, बल्कि क्षेत्रीय भू-राजनीतिक खतरों, विशेष रूप से चीन और पाकिस्तान से उत्पन्न चुनौतियों, के जवाब में रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए भी है।²

भारत की परमाणु नीति का आधार 'नो फर्स्ट यूज' (NFU) और 'न्यूनतम विश्वसनीय निरोध' (Minimum Credible Deterrence) सिद्धांतों पर टिका है, जो क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देते हुए वैश्विक शक्ति संतुलन में भारत की स्थिति को सुदृढ़ करते हैं। यह आलेख निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं पर केंद्रित है :-

- भारत की परमाणु नीति का ऐतिहासिक विकास।
- क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में परमाणु नीति की भूमिका।
- वैश्विक शक्ति संतुलन में भारत की स्थिति।
- परमाणु ऊर्जा और रक्षा के बीच तालमेल।

प्रारंभिक चरण और होमी भाभा की दृष्टि

भारत का परमाणु कार्यक्रम 1940 के दशक में शुरू हुआ, जब डॉ. होमी भाभा ने स्वतंत्र भारत की ऊर्जा और रक्षा आत्मनिर्भरता के लिए परमाणु प्रौद्योगिकी को अपनाने की वकालत की। 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना और 1954 में परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) के गठन ने भारत को परमाणु प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाया। भाभा की तीन-चरणीय रणनीति ने भारत के सीमित यूरेनियम भंडार और प्रचुर थोरियम संसाधनों का उपयोग करने पर जोर दिया³ :-

- पहला चरण : प्रेशराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर्स (PHWRs) के माध्यम से प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग बिजली उत्पादन और प्लूटोनियम उत्पन्न करने के लिए।
- दूसरा चरण : फास्ट ब्रीडर रिएक्टर्स (FBRs) के माध्यम से प्लूटोनियम और यूरेनियम-233 का उत्पादन।
- तीसरा चरण : थोरियम-आधारित रिएक्टर्स के माध्यम से यूरेनियम-233 का उपयोग बिजली उत्पादन के लिए।

परमाणु परीक्षण और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

1974 में भारत ने 'स्माइलिंग बुद्ध' नामक शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट (PNE) किया, जो भारत की परमाणु क्षमता का पहला प्रदर्शन था। इसने भारत को तकनीकी रूप से उन्नत राष्ट्र के रूप में स्थापित किया, लेकिन साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) जैसे संगठनों से अलगाव का कारण बना। 1998 के पोखरण-II परीक्षणों ने भारत को एक पूर्ण परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। इन परीक्षणों ने भारत की रक्षा नीति को मजबूत किया और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में इसकी स्थिति को सुदृढ़ किया।⁴

परमाणु कूटनीति

2008 में भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता (123 Agreement) और NSG से छूट ने भारत को वैश्विक परमाणु व्यापार में एकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने में सक्षम बनाया। इस समझौते ने भारत को रूस, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों से यूरेनियम आयात करने की सुविधा प्रदान की, जिसने भारत की ऊर्जा और रक्षा नीतियों को और मजबूत किया।

भारत-पाकिस्तान गतिशीलता

भारत और पाकिस्तान के बीच परमाणु प्रतिद्वंद्विता दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का एक केंद्रीय तत्व है। पाकिस्तान की परमाणु नीति, जो 'पहले उपयोग' (First Use) के सिद्धांत पर आधारित है, भारत की NFU नीति के विपरीत है। भारत ने अपनी परमाणु त्रिकोण (Nuclear Triad) को मजबूत करके, जिसमें अग्नि मिसाइलें, राफेल जैसे लड़ाकू विमान और INS अरिहंत जैसी परमाणु-संचालित पनडुब्बियां शामिल हैं, पाकिस्तान के खिलाफ विश्वसनीय निरोध बनाए रखा है।

भारत-चीन तनाव

चीन की बढ़ती परमाणु और पारंपरिक सैन्य क्षमताएं भारत के लिए एक दीर्घकालिक चुनौती हैं। चीन के पास लगभग 500 परमाणु हथियार और उन्नत डिलीवरी सिस्टम, जैसे DF-41 ICBMs और हाइपरसोनिक ग्लाइड व्हीकल्स, हैं। भारत ने अग्नि-V मिसाइल (5,000 किमी रेंज) और परमाणु-संचालित पनडुब्बियों के विकास के माध्यम से इस खतरे का जवाब दिया है। भारत की परमाणु नीति क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए संयम और जवाबदेही पर केंद्रित है।⁵

दक्षिण एशिया में स्थिरता-अस्थिरता विरोधाभास

भारत की NFU नीति और न्यूनतम निरोध रणनीति दक्षिण एशिया में 'स्थिरता-अस्थिरता विरोधाभास' (Stability & Instability Paradox) को रेखांकित करती है। यह विरोधाभास इस तथ्य को दर्शाता है कि परमाणु हथियारों की उपस्थिति बड़े पैमाने पर युद्ध को रोकती है, लेकिन सीमित संघर्षों और प्रॉक्सी युद्धों को बढ़ावा दे सकती है⁶, जैसा कि भारत-पाकिस्तान सीमा पर देखा जाता है। भारत की परमाणु नीति इस विरोधाभास को संतुलित करने का प्रयास करती है।

वैश्विक परमाणु व्यवस्था में भारत

भारत ने परमाणु अप्रसार संधि (NPT) पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं, क्योंकि यह इसे भेदभावपूर्ण मानता है। फिर भी, भारत ने जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में अपनी छवि बनाई है। 2008 के भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते और छैठ छूट ने भारत को वैश्विक परमाणु व्यवस्था में एकीकरण की दिशा में ले जाया। भारत की परमाणु नीति वैश्विक अप्रसार मानदंडों के साथ संतुलन बनाए रखते हुए रणनीतिक स्वायत्तता को प्राथमिकता देती है।⁷

उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में भारत

भारत की परमाणु नीति ने इसे वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने में मदद की है। G20, क्वाड (QUAD) और BRICS जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी, साथ ही इसकी परमाणु क्षमताएं, इसे वैश्विक शक्ति संतुलन में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाती हैं। भारत की परमाणु नीति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की इसकी मांग को भी समर्थन देती है।

कूटनीतिक प्रभाव

भारत ने रूस, फ्रांस और अमेरिका जैसे देशों के साथ परमाणु सहयोग को बढ़ावा दिया है। रूस के साथ कुडनकुलम परमाणु संयंत्र और फ्रांस के साथ जायटपुर परियोजना जैसे सहयोग भारत की ऊर्जा और रक्षा क्षमताओं को बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत की परमाणु कूटनीति ने इसे अफ्रीकी और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने में मदद की है।⁸

दोहरे उपयोग की तकनीकें

भारत की परमाणु नीति ऊर्जा और रक्षा क्षेत्रों के बीच गहरा तालमेल प्रदर्शित करती है। उदाहरण के लिए :-

- फास्ट ब्रीडर रिएक्टर्स (FBRs) : ये बिजली उत्पादन के साथ-साथ प्लूटोनियम का उत्पादन करते हैं, जो परमाणु हथियारों के लिए उपयोगी है।
- नौसैनिक रिएक्टर्स : INS अरिहंत और INS अरिघाट में उपयोग किए जाने वाले परमाणु रिएक्टर्स भारत की सामरिक समुद्री क्षमताओं को बढ़ाते हैं।
- रेडियो आइसोटोप्स : ये चिकित्सा, कृषि और रक्षा अनुसंधान में उपयोगी है।

स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता

भारत ने परमाणु ऊर्जा निगम ऑफ इंडिया लिमिटेड (NPCIL) और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के माध्यम से स्वदेशी रिएक्टर्स और ईंधन चक्र प्रौद्योगिकियों को विकसित किया है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) ने अग्नि मिसाइलों और परमाणु-संचालित पनडुब्बियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह स्वदेशीकरण भारत को वैश्विक प्रतिबंधों और आपूर्ति श्रृंखला जोखिमों से बचाता है।

परमाणु त्रिकोण

भारत का परमाणु त्रिकोण (भूमि, वायु और समुद्र-आधारित डिलीवरी सिस्टम) इसकी रक्षा नीति का आधार है। अग्नि-V मिसाइल, राफेल लड़ाकू विमान और INS अरिहंत जैसी SSBNs भारत को द्वितीय-हमला क्षमता प्रदान करती हैं, जो क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर निरोध को मजबूत करती हैं।⁹

चुनौतियाँ

- क्षेत्रीय खतरों का प्रबंधन : चीन और पाकिस्तान की बढ़ती परमाणु क्षमताएं भारत की रक्षा रणनीति के लिए चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं।
- सुरक्षा और सार्वजनिक धारणा : फुकुशिमा (2011) जैसे हादसों के बाद, परमाणु संयंत्रों की सुरक्षा और स्थानीय विरोध भारत के परमाणु ऊर्जा विस्तार को प्रभावित करते हैं।
- सीमित संसाधन : भारत में यूरेनियम के सीमित भंडार (लगभग 70,000 टन) और थोरियम-आधारित रिएक्टर्स की अपरिपक्व तकनीक दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा के लिए बाधाएं हैं।
- वैश्विक अप्रसार दबाव : NPT और CTBT जैसे समझौतों पर हस्ताक्षर न करने के कारण भारत को वैश्विक परमाणु व्यवस्था में पूर्ण एकीकरण की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

भविष्य की संभावनाएँ

- थोरियम-आधारित रिएक्टर्स : भारत के पास विश्व के 25 प्रतिशत थोरियम भंडार हैं और तीसरे चरण के रिएक्टर्स के विकास से ऊर्जा आत्मनिर्भरता बढ़ सकती है।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी : 2047 तक 100,000 मेगावाट परमाणु क्षमता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निजी निवेश और तकनीकी नवाचार आवश्यक हैं।
- रक्षा आधुनिकीकरण : परमाणु-संचालित पनडुब्बियों (SSNs और SSBNs) और लंबी दूरी की मिसाइलों का विस्तार भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करेगा।
- वैश्विक सहयोग : NSG की सदस्यता और अन्य देशों के साथ सहयोग भारत की परमाणु कूटनीति को और सशक्त करेगा।

निष्कर्ष

भारत की परमाणु नीति क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह नीति ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा क्षमताओं और वैश्विक कूटनीति के बीच संतुलन बनाती है। भारत की NFU और न्यूनतम निरोध रणनीति क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देती है, जबकि इसकी परमाणु ऊर्जा रणनीति 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन लक्ष्य को समर्थन देती है। हालांकि, क्षेत्रीय खतरों, सुरक्षा चिंताओं और संसाधन सीमाओं जैसे मुद्दे चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं। भविष्य में, थोरियम-आधारित प्रौद्योगिकी, स्वदेशीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग भारत को एक जिम्मेदार और प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में मदद करेंगे। भारत की परमाणु नीति न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता में भी योगदान देती है।

संदर्भ-सूची :

1. जैन, पुष्पेश पंत, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ, 2000
2. ठाकुर, रमेश, "भारत का नैतिक बम", दैनिक भास्कर, 8 दिसम्बर 2009
3. तिवारी, ओमप्रकाश, "राष्ट्रीय सुरक्षा", ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
4. दीक्षित, जे०एन०, "भारतीय विदेश नीति", प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2003
5. देवसरे, हरिकृष्ण, "परमाणु शक्ति और भारत का भविष्य", डायमण्ड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 1998
6. कुमार, पाल, डॉ०, विनोद, "परमाणु संपन्न भारत," डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2010।
7. मीरचंदानी, जी०जी०, "इंडियाज न्यूक्लियर डिलेम्मा", विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968
8. यादव, कुमार, डॉ० प्रदीप, "नाभिकीय शक्ति संपन्न भारत", राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2014।
9. शुक्ल, कृष्णानंद, "आयुध संधि प्रस्ताव", विकास प्रकाशन, नई दिल्ली

